Mrk

Chapter 4

Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

1	Καὶ	πάλιν,	ἤρξατο	διδάσκειν	παρὰ	τὴν	θάλασσαν.	καὶ	συνάγεται	πρὸς	
	और	फिर	लगा	सिखाने	पास-से	झील	के	और	इकट्ठी-हुई	उसके-पास	
	G2532	G3825	G0756	G1321	G3844	G3588	G2281	G2532	G4863	G4314	
	αὐτὸν	ὄχλος	πλεῖστος,	ὥστε	αὐτὸν	εἰς	πλοῖον	ἐμβάντα,	καθῆσθαι	ἐν	τῇ
	भीड़	बड़ी	ऐसे-कि	उसे	में	नाव	में	बैठना	झील	पर	और
	G0846	G3793	G4118	G5620	G0846	G1519	G4143	G1684	G2521	G1722	G3588
	θαλάσσῃ,	καὶ	πᾶς	ὁ	ὄχλος	πρὸς	τὴν	θάλασσαν,	ἐπὶ	τῆς	γῆς	ἦσαν.
	सारी	भीड़	थी	ओर	झील	की	भूमि	पर	—	—	—	—
	G2281	G2532	G3956	G3588	G3793	G4314	G3588	G2281	G1909	G3588	G1093	G1510

> उसने झील के किनारे उपदेश देना फिर शुरू कर दिया। वहाँ उसके चारों ओर बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गयी। इसलिये वह झील में खड़ी एक नाव पर जा बैठा। और सभी लोग झील के किनारे धरती पर खड़े थे।

2	καὶ	ἐδίδασκεν	αὐτοὺς	ἐν	παραβολαῖς	πολλά,	καὶ	ἔλεγεν	αὐτοῖς,	ἐν	
	और	सिखाता-था	उन्हें	में	दृष्टान्तों	बहुत	और	कहता-था	उनसे	में	
	G2532	G1321	G0846	G1722	G3850	G4183	G2532	G3004	G0846	G1722	
	τῇ	διδαχῇ	αὐτοῦ,								
	उपदेश	अपने	—								
	G3588	G1322	G0846								

> उसने दृष्टान्त देकर उन्हें बहुत सी बातें सिखाईं। अपने उपदेश में उसने कहा,

3	Ἀκούετε!	ἰδοὺ,	ἐξῆλθεν	ὁ	σπείρων	σπεῖραι.
	सुनो	देखो	निकला	बोने-वाला	बोने	—
	G0191	G3708	G1831	G3588	G4687	G4687

> “सुनो! एक बार एक किसान बीज वोने के लिए निकला।

4	καὶ	ἐγένετο	ἐν	τῷ	σπείρειν,	ὃ	μὲν	ἔπεσεν	παρὰ	τὴν	ὁδόν,	καὶ
	और	हुआ	में	बोने	के	जो-तो	गिरा	पास-से	रास्ते	के	और	आये
	G2532	G1096	G1722	G3588	G4687	G3739	G3303	G4098	G3844	G3588	G3598	G2532
	ἦλθεν	τὰ	πετεινὰ,	καὶ	κατέφαγεν	αὐτό.						
	पक्षी	के	और	खा-लिया	उसे	—						
	G2064	G3588	G4071	G2532	G2719	G0846						

> तब ऐसा हुआ कि जब उसने बीज बोये तो कुछ मार्ग के किनारे गिरे। पक्षी आये और उन्हें चुग गये।

5	καὶ	ἄλλο	ἔπεσεν	ἐπὶ	τὸ	πετρῶδες,	(καὶ)	ὅπου	οὐκ	εἶχεν	γῆν	πολλήν,
	और	दूसरा	गिरा	पर	पथरीले	के	जहाँ	नहीं	थी	मिट्टी	बहुत	और
	G2532	G0243	G4098	G1909	G3588	G4075	G2532	G3699	G3756	G2192	G1093	G4183
	καὶ	εὐθὺς	ἐξανέτειλεν,	διὰ	τὸ	μὴ	ἔχειν	βάθος	γῆς.			
	तुरन्त	उगा	के-कारण	नहीं	थी	गहराई	मिट्टी	की	उसे			
	G2532	G2112	G1816	G1223	G3588	G3361	G2192	G0899	G1093			

> दूसरे कुछ बीज पथरीली धरती पर गिरे जहाँ बहुत मिट्टी नहीं थी। वे गहरी मिट्टी न होने का कारण जल्दी ही उग आये।

6 καὶ ὅτε ἀνέτειλεν ὁ ἥλιος, ἐκαυματίσθη, καὶ διὰ τὸ μὴ
और-जब उगा सूरज झुलसा-दिया-गया और के-कारण नहीं थी जड़ उसे
G2532 G3753 G0393 G3588 G2246 G2739 G2532 G1223 G3588 G3361

ἔχειν ῥίζαν, ἐξηράνθη.
सूख-गया — —
G2192 G4491 G3583

> और जब सूरज उगा तो वे झुलस गये और जड़ न पकड़ पाने के कारण मुरझा गये।

7 καὶ ἄλλο ἔπεσεν εἰς τὰς ἀκάνθας, καὶ ἀνέβησαν αἱ ἄκανθαι, καὶ
और दूसरा गिरा में काँटों के और ऊपर-चढ़े काँटे के और
G2532 G0243 G4098 G1519 G3588 G0173 G2532 G0305 G3588 G0173 G2532

συνέπνιξαν αὐτό, καὶ καρπὸν οὐκ ἔδωκεν.
दबा-दिया उसे और फल नहीं दिया
G4846 G0846 G2532 G2590 G3756 G1325

> कुछ और बीज काँटों में जा गिरे। काँटे बड़े हुए और उन्होंने उन्हें दबा लिया जिससे उनमें दाने नहीं पड़े।

8 καὶ ἄλλα ἔπεσεν εἰς τὴν γῆν τὴν καλήν, καὶ ἐδίδου καρπόν,
और दूसरा गिरा में भूमि अच्छी के और देता-था फल ऊपर-चढ़ता-हुआ
G2532 G0243 G4098 G1519 G3588 G1093 G3588 G2570 G2532 G1325 G2590

ἀναβαίνοντα καὶ αὐξανόμενα, καὶ ἔφερεν ἓν τριάκοντα, καὶ ἓν
और बढ़ता-हुआ और लाता-था तीस और साठ और सौ
G0305 G2532 G0837 G2532 G5342 G1520 G5144 G2532 G1520

ἑξήκοντα, καὶ ἓν ἑκατόν.
— — — —
G1835 G2532 G1520 G1540

> कुछ बीज अच्छी धरती पर गिरे। वे उगे, उनकी बढ़वार हुई और उन्होंने अनाज पैदा किया। तीस गुणी, साठ गुणी और यहाँ तक कि सौ गुणी अधिक फसल उतरी।"

9 καὶ ἔλεγεν, Ὃς ἔχει ὦτα ἀκούειν, ἀκουέτω.
और कहता-था जिसके हैं कान सुनने-के सुने
G2532 G3004 G3739 G2192 G3775 G0191 G0191

> फिर उसने कहा, "जिसके पास सुनने को कान है, वह सुने!"

10 Καὶ ὅτε ἐγένετο κατὰ μόνας, ἠρώτων αὐτὸν οἱ περὶ αὐτὸν σὺν
और जब हुआ अकेले-में पूछते-थे उसे उसके-चारों-ओर साथ बारह के दृष्टान्त
G2532 G3753 G1096 G2596 G3441 G2065 G0846 G3588 G4012 G0846 G4862

τοῖς δώδεκα, τὰς παραβολάς.
के-विषय-में — — —
G3588 G1427 G3588 G3850

> फिर जब वह अकेला था तो उसके बारह शिष्यों समेत जो लोग उसके आसपास थे, उन्होंने उससे दृष्टान्तों के बारे में पूछा।

11 καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς, Ὑμῖν τὸ μυστήριον δέδοται τῆς βασιλείας τοῦ
और कहता-था उनसे तुमको दिया-गया-है के भेद राज्य परमेश्वर के
G2532 G3004 G0846 G4771 G3588 G3466 G1325 G3588 G0932 G3588

Θεοῦ. ἐκείνοις δὲ τοῖς ἔξω, ἐν παραβολαῖς τὰ πάντα γίνεται,
के-तो बाहर-वालों उन में दृष्टान्तों सब होता-है — — —
G2316 G1565 G1161 G3588 G1854 G1722 G3850 G3588 G3956 G1096

> यीशु ने उन्हें बताया, "तुम्हें तो परमेश्वर के राज्य का भेद दे दिया गया है किन्तु उनके लिये जो बाहर के हैं, सब बातें दृष्टान्तों में होती हैं:

12 ἵνα βλέποντες, βλέπωσιν καὶ μὴ ἴδωσιν; καὶ ἀκούοντες, ἀκούωσιν καὶ
ताकि देखते-हुए देखें और न-देखें और सुनते-हुए सुनें और न-समझें
G2443 G0991 G0991 G2532 G3361 G3708 G2532 G0191 G0191 G2532

μὴ συνιῶσιν; μήˎ ποτε ἐπιστρέψωσιν, καὶ ἀφεθῇ αὐτοῖς.
कहीं मुड़ें और क्षमा-किया-जाए उन्हें — — —
G3361 G4920 G3361 G4219 G1994 G2532 G0863 G0846

> ‘ताकि वे देखें और देखते ही रहें, पर उन्हें कुछ सूझे नहीं, सुनें और सुनते ही रहें पर कुछ समझें नहीं। ऐसा न हो जाए कि वे फिरें और क्षमा किए जाएँ।’”

13 καὶ λέγει αὐτοῖς, Οὐκ οἴδατε τὴν παραβολὴν ταύτην? καὶ πῶς πάσας
और कहता-है उनसे नहीं जानते को दृष्टान्त इस कैसे सबों-को दृष्टान्तों
G2532 G3004 G0846 G3756 G1492 G3588 G3850 G3778 G2532 G4459 G3956

τὰς παραβολὰς γνώσεσθε?
जानोगे — —
G3588 G3850 G1097

> उसने उनसे कहा, “यदि तुम इस दृष्टान्त को नहीं समझते तो किसी भी और दृष्टान्त को कैसे समझोगे?

14 ὁ σπείρων τὸν λόγον σπείρει.
बोने-वाला को वचन बोता-है —
G3588 G4687 G3588 G3056 G4687

> किसान जो बोता है, वह वचन है।

15 οὗτοι δέ εἰσιν οἱ παρὰ τὴν ὁδὸν, ὅπου σπείρεται ὁ λόγος, καὶ
और-अब ये हैं जो पास-से रास्ते के जहाँ बोया-जाता-है वचन के और
G3778 G1161 G1510 G3588 G3844 G3588 G3598 G3699 G4687 G3588 G3056 G2532

ὅταν ἀκούσωσιν, εὐθὺς ἔρχεται ὁ Σατανᾶς, καὶ αἴρει τὸν λόγον τὸν
जब सुनें तुरन्त आता-है शैतान के और उठा-ले-जाता-है वचन को जो
G3752 G0191 G2112 G2064 G3588 G4567 G2532 G0142 G3588 G3056 G3588

ἐσπαρμένον εἰς αὐτούς.
बोया-गया-है उनके-दिलों-में —
G4687 G1519 G0846

> कुछ लोग किनारे का वह मार्ग हैं जहाँ वचन बोया जाता है। जब वे वचन को सुनते हैं तो तत्काल शैतान आता है और जो वचन रूपी बीज उनमें बोया गया है, उसे उठा ले जाता है।

16 καὶ οὗτοί εἰσιν ὁμοίως οἱ ἐπὶ τὰ πετρώδη σπειρόμενοι, οἳ, ὅταν
और ये हैं इसी-तरह जो पर पथरीले के बोए-जाते-हैं जो जब
G2532 G3778 G1510 G3668 G3588 G1909 G3588 G4075 G4687 G3739 G3752

ἀκούσωσιν τὸν λόγον, εὐθὺς μετὰ χαρᾶς λαμβάνουσιν αὐτόν,
सुनें तुरन्त साथ खुशी के ग्रहण-करते-हैं उसे —
G0191 G3588 G3056 G2112 G3326 G5479 G2983 G0846

> “और कुछ लोग ऐसे हैं जैसे पथरीली धरती में बोया बीज। जब वे वचन को सुनते हैं तो उसे तुरन्त आनन्द के साथ अपना लेते हैं।

17 καὶ οὐκ ἔχουσιν ῥίζαν ἐν ἑαυτοῖς, ἀλλὰ πρόσκαιροί εἰσιν; εἶτα γενομένης
और नहीं रखते जड़ में अपने-आप परन्तु अस्थाई हैं फिर आती-है
G2532 G3756 G2192 G4491 G1722 G1438 G0235 G4340 G1510 G1534 G1096

θλίψεως ἢ διωγμοῦ διὰ τὸν λόγον, εὐθὺς σκανδαλίζονται.
क्लेश या सताव के-कारण वचन के तुरन्त ठोकर-खाते-हैं
G2347 G2228 G1375 G1223 G3588 G3056 G2112 G4624

> किन्तु उसके भीतर कोई जड़ नहीं होती, इसलिए वे कुछ ही समय ठहर पाते हैं और बाद में जब वचन के कारण उन पर विपत्ति आती है और उन्हें यातनाएँ दी जाती हैं, तो वे तत्काल अपना विश्वास खो बैठते हैं।

18 καὶ और G2532 ἄλλοι दूसरे G0243 εἰσὶν हैं G1510 οἱ जो G3588 εἰς में G1519 τὰς काँटों G3588 ἀκάνθας के G0173 σπειρόμενοι. बोए-जाते-हैं G4687 οὗτοί ये G3778 εἰσιν हैं G1510 οἱ, जो G3588 τὸν वचन G3588 λόγον सुनते-हैं G3056 ἀκούσαντες, के G0191

"और दूसरे लोग ऐसे हैं जैसे काँटों में बोये गये बीज। ये वे हैं जो वचन को सुनते हैं।

19 καὶ और G2532 αἱ की G3588 μέριμναι चिन्ताएँ G3308 τοῦ संसार G3588 αἰῶνος, की G0165 καὶ और G2532 ἡ धन G3588 ἀπάτη की G0539 τοῦ धोखा G3588 πλούτου, और G4149 καὶ शेष G2532 αἱ वस्तुओं-की G3588 περὶ के G4012 τὰ अभिलाषाएँ G3588 λοιπὰ, प्रवेश-करके G3062 ἐπιθυμίαι दबा-देती-हैं G1939 εἰσπορευόμεναι, वचन-को G1531 συμπνίγουσιν और G4846 τὸν निष्फल G3588 λόγον, हो-जाती-हैं G3056 καὶ — G2532 ἄκαρπος — G0175 γίνεται. — G1096

किन्तु इस जीवन की चिंताएँ, धन दौलत का लालच और दूसरी वस्तुओं को पाने की इच्छा उनमें आती है और वचन को दबा लेती है। जिससे उस पर फल नहीं लग पाता।

20 καὶ और G2532 ἐκεῖνοί ये G1565 εἰσιν हैं G1510 οἱ जो G3588 ἐπὶ पर G1909 τὴν भूमि G3588 γῆν अच्छी G1093 τὴν के G3588 καλὴν बोए-गए G2570 σπαρέντες; जो G4687 οἵτινες सुनते-हैं G3748 ἀκούουσιν वचन-को G0191 τὸν और G3588 λόγον ग्रहण-करते-हैं G3056 καὶ और G2532 παραδέχονται, फल-देते-हैं G3858 καὶ तीस G2532 καρποφοροῦσιν, और G2592 ἓν साठ G1520 τριάκοντα, और G5144 καὶ सौ G2532 ἓν — G1520 ἑξήκοντα, — G1835 καὶ — G2532 ἓν — G1520 ἑκατόν. — G1540

"और कुछ लोग उस बीज के समान हैं जो अच्छी धरती पर बोया गया है। ये वे हैं जो वचन को सुनते हैं और ग्रहण करते हैं। इन पर फल लगता है कहीं तीस गुणा, कहीं साठ गुणा तो कहीं सौ गुणे से भी अधिक।"

21 Καὶ और G2532 ἔλεγεν कहता-था G3004 αὐτοῖς, उनसे G0846 ὅτι कि G3754 Μήτι क्या G3385 ἔρχεται आता-है G2064 ὁ दीपक G3588 λύχνος के G3088 ἵνα ताकि G2443 ὑπὸ नीचे G5259 τὸν दबाई-बर्तन G3588 μόδιον रखा-जाए G3426 τεθῇ, के G5087 ἢ या G2228 ὑπὸ नीचे G5259 τὴν चारपाई G3588 κλίνην? के G2825 οὐχ — G3756 ἵνα — G2443 ἐπὶ — G1909 τὴν — G3588 λυχνίαν — G3087 τεθῇ? — G5087

फिर उसने उनसे कहा, "क्या किसी दिये को कभी इसलिए लाया जाता है कि उसे किसी बर्तन के या बिस्तर के नीचे रख दिया जाये? क्या इसे दीवट के ऊपर रखने के लिये नहीं लाया जाता?

22 οὐ नहीं-तो G3756 γάρ है G1063 ἐστιν कुछ-भी G1510 τι छिपा G5101 κρυπτὸν, यदि-नहीं G2927 ἐὰν ताकि G1437 μὴ प्रकट-हो G3361 ἵνα और-न G2443 φανερωθῇ, हुआ G5319 οὐδὲ गुप्त G3761 ἐγένετο परन्तु G1096 ἀπόκρυφον, ताकि G0614 ἀλλ' खुले-में G0235 ἵνα आए G2443 ἔλθῃ — G2064 εἰς — G1519 φανερόν. — G5318

क्योंकि कुछ भी ऐसा गुप्त नहीं है जो प्रकट नहीं होगा और कोई रहस्य ऐसा नहीं है जो प्रकाश में नहीं आयेगा।

23 εἴ τις ἔχει ὦτα ἀκούειν, ἀκουέτω.
यदि किसी-को हैं कान सुनने-के सुने
G1487 G5100 G2192 G3775 G0191 G0191

> यदि किसी के पास कान हैं तो वह सुने!”

24 Καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς, Βλέπετε τί ἀκούετε: ἐν ᾧ μέτρῳ μετρεῖτε
और कहता-था उनसे देखो क्या सुनते-हो जिस-माप-से नापते-हो उसी-से नापा-जाएगा
G2532 G3004 G0846 G0991 G5101 G0191 G1722 G3739 G3358 G3354

μετρηθήσεται ὑμῖν, καὶ προστεθήσεται ὑμῖν.
तुम्हें और बढ़ाया-जाएगा तुम्हें —
G3354 G4771 G2532 G4369 G4771

> फिर उसने उनसे कहा, “जो कुछ तुम सुनते हो उस पर ध्यानपूर्वक विचार करो, जिस नाप से तुम दूसरों को नापते हो, उसी नाप से तुम भी नापे जाओगे। बल्कि तुम्हारे लिये उसमें कुछ और भी जोड़ दिया जायेगा।

25 ὃς γὰρ ἔχει, δοθήσεται αὐτῷ; καὶ ὃς οὐκ ἔχει, καὶ ὃ
क्योंकि जिसके-पास है दिया-जाएगा उसे और जिसके-पास नहीं है जो रखता-है
G3739 G1063 G2192 G1325 G0846 G2532 G3739 G3756 G2192 G2532 G3739

ἔχει ἀρθήσεται ἀπ’ αὐτοῦ.
और लिया-जाएगा उससे —
G2192 G0142 G0575 G0846

> जिसके पास है उसे और भी दिया जायेगा और जिस किसी के पास नहीं है, उसके पास जो कुछ है, वह भी ले लिया जायेगा।”

26 Καὶ ἔλεγεν, Οὕτως ἐστὶν ἡ βασιλεία τοῦ Θεοῦ, ὡς ἄνθρωπος βάλῃ
और कहता-था इस-तरह है राज्य परमेश्वर का जैसे मनुष्य डाले बीज
G2532 G3004 G3779 G1510 G3588 G0932 G3588 G2316 G5613 G0444 G0906

τὸν σπόρον ἐπὶ τῆς γῆς,
को पर भूमि की —
G3588 G4703 G1909 G3588 G1093

> फिर उसने कहा, “परमेश्वर का राज्य ऐसा है जैसे कोई व्यक्ति खेत में बीज फैलाये।

27 καὶ καθεύδῃ, καὶ ἐγείρηται νύκτα καὶ ἡμέραν, καὶ ὁ σπόρος βλαστᾷ
और सोता-हो और उठता-हो रात और दिन और बीज अंकुरित-हो और
G2532 G2518 G2532 G1453 G3571 G2532 G2250 G2532 G3588 G4703 G0985

καὶ μηκύνηται; ὡς οὐκ οἶδεν αὐτός.
बढ़े जैसे नहीं जानता वह —
G2532 G3373 G5613 G3756 G1492 G0846

> रात को सोये और दिन को जागे और फिर बीज में अंकुर निकलें, वे बढ़े और पता नहीं चले कि यह सब कैसे हो रहा है।

28 αὐτομάτη ἡ γῆ καρποφορεῖ--πρῶτον χόρτον, εἶτα στάχυν, εἶτα πλήρης
अपने-आप-से भूमि के फल-देती-है पहले घास फिर बालियाँ फिर पूरा
G0844 G3588 G1093 G2592 G4412 G5528 G1534 G4719 G1534 G4134

σῖτον ἐν τῷ στάχυϊ.
अन्न में बालियों —
G4621 G1722 G3588 G4719

> धरती अपने आप अनाज उपजाती है। पहले अंकुर फिर बालें और फिर बालों में भरपूर अनाज।

29 ὅταν δὲ παραδοῖ ὁ καρπός, εὐθὺς ἀποστέλλει τὸ δρέπανον,
और-जब परिपक्व-हो-जाए फल का तुरन्त भेजता-है हँसिया क्योंकि आ-गई-है
G3752 G1161 G3860 G3588 G2590 G2112 G0649 G3588 G1407

ὅτι παρέστηκεν ὁ θερισμός.
कटनी के — —
G3754 G3936 G3588 G2326

> जब अनाज पक जाता है तो वह तुरन्त उसे हंसिये से काटता है क्योंकि फसल काटने का समय आ जाता है।"

30 Καὶ ἔλεγεν, Πῶς ὁμοιώσωμεν τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ? ἢ ἐν τίνι
और कहता-था कैसे तुलना-करें राज्य परमेश्वर का को या में दृष्टान्त
G2532 G3004 G4459 G3666 G3588 G0932 G3588 G2316 G2228 G1722 G5101

αὐτὴν παραβολῇ θῶμεν?
किस रखें उसे
G0846 G3850 G5087

> फिर उसने कहा, "हम कैसे बतायें कि परमेश्वर का राज्य कैसा है? उसकी व्याख्या करने के लिए हम किस उदाहरण का प्रयोग करें?

31 ὡς κόκκῳ σινάπεως, ὃς, ὅταν σπαρῇ ἐπὶ τῆς γῆς, μικρότερον ὂν
जैसे दाने राई के जो छोटा है सबों-से बीजों के जो
G5613 G2848 G4615 G3739 G3752 G4687 G1909 G3588 G1093 G3398 G1510

πάντων τῶν σπερμάτων τῶν ἐπὶ τῆς γῆς,
पृथ्वी-पर हैं — — — — —
G3956 G3588 G4690 G3588 G1909 G3588 G1093

> वह राई के दाने जैसा है जो जब धरती में बोया जाता है तो बीजों में सबसे छोटा होता है।

32 καὶ ὅταν σπαρῇ, ἀναβαίνει, καὶ γίνεται μεῖζον πάντων τῶν λαχάνων,
और जब बोया-जाए ऊपर-चढ़ता-है और बन-जाती-हैं शाखाएँ बड़ी ऐसे-कि सकते-हैं
G2532 G3752 G4687 G0305 G2532 G1096 G3173 G3956 G3588 G3001

καὶ ποιεῖ κλάδους μεγάλους, ὥστε δύνασθαι ὑπὸ τὴν σκιὰν αὐτοῦ τὰ
नीचे छाँया उसकी बसेरा-करना पक्षी के आकाश — — — —
G2532 G4160 G2798 G3173 G5620 G1410 G5259 G3588 G4639 G0846 G3588

πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ κατασκηνοῦν.
— — — —
G4071 G3588 G3772 G2681

> किन्तु जब वह रोप दिया जाता है तो बढ़ कर भूमि के सभी पौधों से बड़ा हो जाता है। उसकी शाखाएँ इतनी बड़ी हो जाती हैं कि हवा में उड़ती चिड़ियाएँ उसकी छाया में घोंसला बना सकती हैं।"

33 Καὶ τοιαύταις παραβολαῖς πολλαῖς, ἐλάλει αὐτοῖς τὸν λόγον, καθὼς
और ऐसे बहुत बोलता-था उनसे वचन को जैसे
G2532 G5108 G3850 G4183 G2980 G0846 G3588 G3056 G2531

ἠδύναντο ἀκούειν,
सकते-थे सुनने
G1410 G0191

> ऐसे ही और बहुत से दृष्टान्त देकर वह उन्हें वचन सुनाया करता था। वह उन्हें, जितना वे समझ सकते थे, बताता था।

34 χωρὶς δὲ παραβολῆς οὐκ, ἐλάλει αὐτοῖς; κατ' ἰδίαν δὲ τοῖς ἰδίοις
और-बिना दृष्टान्त के नहीं बोलता-था उनसे के-तो अलग-में को चेलों अपने
G5565 G1161 G3850 G3756 G2980 G0846 G2596 G2398 G1161 G3588 G2398

μαθηταῖς, ἐπέλυεν πάντα.
समझाता-था सब —
G3101 G1956 G3956

बिना किसी दृष्टान्त का प्रयोग किये वह उनसे कुछ भी नहीं कहता था। किन्तु जब अपने शिष्यों के साथ वह अकेला होता तो सब कुछ का अर्थ बता कर उन्हें समझाता।

35 Καὶ (और G2532) λέγει (कहता-है G3004) αὐτοῖς, (उनसे G0846) ἐν (में G1722) ἐκείνῃ (उसी G1565) τῇ (दिन G3588) ἡμέρᾳ, (के G2250) ὀψίας (शाम G3798) γενομένης, (होते-हुए G1096) Διέλθωμεν (चलें G1330) εἰς (पार G1519) τὸ (की G3588) πέραν. (— G4008)

उस दिन जब शाम हुई, यीशु ने उनसे कहा, "चलो, उस पार चलें।"

36 καὶ (और G2532) ἀφέντες (छोड़कर G0863) τὸν (भीड़-को G3588) ὄχλον, (के G3793) παραλαμβάνουσιν (ले-जाते-हैं G3880) αὐτὸν (उसे G0846) ὡς (जैसा G5613) ἦν (था G1510) ἐν (में G1722) τῷ (नाव G3588) πλοίῳ; (के G4143) καὶ (और G2532) ἄλλα (दूसरी G0243) πλοῖα (थीं G4143) ἦν (नावें G1510) μετ' (साथ-में G3326) αὐτοῦ. (उसके G0846)

इसलिये, वे भीड़ को छोड़ कर, जैसे वह था वैसा ही उसे नाव पर साथ ले चले। उसके साथ और भी नावें थीं।

37 καὶ (और G2532) γίνεται (आती-है G1096) λαῖλαψ (आँधी G2978) μεγάλη (बड़ी G3173) ἀνέμου, (हवा G0417) καὶ (की G2532) τὰ (और G3588) κύματα (लहरें G2949) ἐπέβαλλεν (गिरती-थीं G1911) εἰς (में G1519) τὸ (नाव G3588) πλοῖον, (और G4143) ὥστε (भर-जाने-लगी-थी G5620) ἤδη (वह G2235) γεμίζεσθαι (— G1072) τὸ (— G3588) πλοῖον. (— G4143)

एक तेज बवंडर उठा। लहरें नाव पर पछाड़ें मार रही थीं। नाव पानी से भर जाने को थी।

38 καὶ (और G2532) αὐτὸς (था G0846) ἦν (वह G1510) ἐν (में G1722) τῇ (पिछले-भाग G3588) πρύμνῃ, (के G4403) ἐπὶ (पर G1909) τὸ (तकिया G3588) προσκεφάλαιον (के G4344) καθεύδων. (सोता-हुआ G2518) καὶ (और G2532) ἐγείρουσιν (जगाते-हैं G1453) αὐτὸν, (उसे G0846) καὶ (और G2532) λέγουσιν (कहते-हैं G3004) αὐτῷ, (उससे G0846) Διδάσκαλε, (गुरु G1320) οὐ (नहीं G3756) μέλει (चिन्ता G3199) σοι (तुझे G4771) ὅτι (कि G3754) ἀπολλύμεθα? (नाश-हो-रहे-हैं G0622)

किन्तु यीशु नाव के पिछले भाग में तकिया लगाये सो रहा था। उन्होंने उसे जगाया और उससे कहा, "हे गुरु, क्या तुझे ध्यान नहीं है कि हम डूब रहे हैं?"

39 καὶ (और G2532) διεγερθεὶς (जागकर G1326) ἐπετίμησεν (डाँटा G2008) τῷ (हवा-को G3588) ἀνέμῳ, (के G0417) καὶ (और G2532) εἶπεν (कहा G3004) τῇ (झील-से G3588) θαλάσσῃ, (चुप-रह G2281) Σιώπα, (और G4623) πεφίμωσο. (थम-जा G5392) καὶ (और G2532) ἐκόπασεν (रुक-गई G2869) ὁ (हवा G3588) ἄνεμος, (के G0417) καὶ (और G2532) ἐγένετο (हो-गई G1096) γαλήνη (शान्ति G1055) μεγάλη. (बड़ी G3173)

यीशु खड़ा हुआ। उसने हवा को डाँटा और लहरों से कहा, "शान्त हो जाओ। थम जाओ।" तभी बवंडर थम गया और चारों तरफ असीम शांति छा गयी।

40 καὶ (और G2532) εἶπεν (कहा G3004) αὐτοῖς, (उनसे G0846) Τί (क्यों G5101) δειλοί (डरपोक G1169) ἐστε, (हो G1510) οὔπω (अभी-तक G3768) ἔχετε (नहीं G2192) πίστιν? (रखते G4102)

फिर यीशु ने उनसे कहा, "तुम डरते क्यों हो? क्या तुम्हें अब तक विश्वास नहीं है?"

41

καὶ	ἐφοβήθησαν	φόβον	μέγαν,	καὶ	ἔλεγον	πρὸς	ἀλλήλους,	Τίς	ἄρα	οὗτός
और	डर-गए	भय	बड़े	के	और	कहते-थे	आपस-में	कौन	है	यह-तो
G2532	G5399	G5401	G3173	G2532	G3004	G4314	G0240	G5101	G0686	G3778

ἐστιν,	ὅτι	καὶ	ὁ	ἄνεμος	καὶ	ἡ	θάλασσα	ὑπακούει	αὐτῷ?
कि	और	हवा	के	और	झील	के	आज्ञा-मानती-है	का	उसकी
G1510	G3754	G2532	G3588	G0417	G2532	G3588	G2281	G5219	G0846

> किन्तु वे बहुत डर गये थे। फिर उन्होंने आपस में एक दूसरे से कहा, “आखिर यह है कौन? हवा और पानी भी इसकी आज्ञा मानते हैं!”